Sl. No. of Q.P. : 542

26.12.2023(M)

Unique paper code : 2052101101
Name of the paper : Hindi Kavita Aadikal Evam Nirgunbhakti
Name of course : B.A.(Hons) Hindi
Type of Paper : DSE-I
Semester : I
Maximum Marks : 90

अनुक्रमांक :

Time : 3 Hours

Maitreyi College, Chanakya Puri, New Delhi-110021 LIBRARY

छात्रों के लिए निर्देश:

1. इस प्रश्न पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्यहैं।

1. निम्नलिखित पद्यांशो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: (9x3=27)

(क) भयौ एक फुरमान । बान जोगिनिपुर संध्यौ॥
सोइ सबद अरु वान । अग्र अबिचल कर बंध्यौ ॥
भयौ बियौ फुरमान । तानि रष्यौ श्रवनंतरि ॥
तियौ भयौ अनभग्गौ । हर्‌यां पतिसाही धरंतरि ॥
लै दसन रसन तालु असघन । सीस फट्टि दह दिसि गबन॥
सुरतान पर्‌यो षां पुक्करै । भयौ चंद राजन मरन ॥

अथवा

नन्दक नन्दन कदम्बेरि तरुतरे धिरे-धिरे टरलि बोलाब।
समय संकेत निकेतन बइसल बेरि बेरि बोलि पठाव ॥
सामरी तोहरा लागि अनुखने बिकल मुरारि ।।
जमुनाक तिर उपवन उदबेगल फिरि फिरि ततहि निहारि ॥
गौरस बिके निके अबइते जाइते जनि जनि पुंछ बनबारि ।।
तोंहे मतिमान सुमति मधुसूदन वचनं सुनह किछु मोरा ।।
भनइ विद्यापति सुन बरजौवति बेन्दह नन्दकिसोरा॥

(ख) इस तन का दीवा करौं, बाती मेल्यूँ जीव।
लोही सीचौं तेल ज्यूं, कब मुखु देखौं पीव।।
सुखिया सब संसार है, खाये अरु सोवै।
दुखिया दास कबीर है, जागे अरु रोवै।

अथवा

मेरी हार हिरांनौं मैं लजाऊ, सास दुरासनि पीव डराऊँ ॥
हार गुह्यौर मेरो राम ताग, विचि विचि मान्यक एक लाग॥
रतन प्रवाले परम जोति, ता अंतरि अंतरि लागे मोति ॥
पंच सखी मिलिहै सुजान, चलहु त जईये त्रिवेणी न्हान ।
न्हाह धोइ कै तिलक दीन्ह, नां जानूं हार किनहूं लीन्ह ॥
हार हिरांनी जन बिमल कीन्ह, मेरौ आहि परोसनि हार लीन्ह ॥
तिनि लोक की जानैं पीर, सब देव सिरोमनि कहै कबीर ॥

(ग) मिलहिं रहसि सब चढ़हिं हिंडोरी। झूलि लेहिं सुख बारी भोरी ॥
झूलि लेहु नैहर जब ताईं। फिरि नहिं झूलन देइहिं साईं ॥
पुनि सासुर लेइ राखिहि तहाँ। नैहर चाह न पाउब जहाँ ॥
कित यह धूप, कहाँ यह छाहाँ। रहब सखी बिनु मंदिर माहाँ ।।
गुन पूछिहि और लाइहि दोखू। कौन उतर पाउब तहँ मोखू ॥
सास ननद के भौंह सिकोरे। रहब सँकोचि दुवौ कर जोरे ॥
कित यह रहसि जो आउब करना। ससुरेइ अंत जनम दुख भरना ॥
कित नैहर पुनि आउब, कित ससुरे यह खेल ।।
आपु आपु कहँ होइहि, परब पंखि जस डेल ॥

अथवा

सखी एक तेइ खेल न जाना। भै अचेत मनिहार गवाँना ॥
कवल डार गहि भै बेकरारा। कासों पुकारौं आपन हारा॥
कित खेलै आइउँ एहि साथा। हार गँवाइ चलिउँ लेइ हाथा ॥
घर पैठत पूँछब यह हारू। कौन उतर पाउब पैसारू॥
नैन सीप आँसू तस भरे। जानौ मोति गिरहिं सब ढरे॥
सखिन कहा बौरी कोकिला। कौन पानि जेहि पौन न मिला ? ॥
हार गँवाइ सो ऐसे रोवा। हेरि हेराइ लेइ जौ खोवा ॥
लागीं सब मिलि हेरै, बूड़ि बूड़ि एक साथ।
कोइ उठी मोती लेइ, काहू घोंघा हाथ ॥

2. 'बानबेघ समय' के आधार पर चंदबरदाई की काव्यभाषा पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'बानबेघ समय' की रस-योजना की समीक्षा कीजिए। (14)

3. विद्यापति के काव्य-सौंदर्य का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

विद्यापति की गीति योजना पर विचार कीजिए। (14)

4. कबीर की भक्ति-भावना का विवेचन कीजिए।

अथवा

कबीर काव्य के आधार पर गुरु की महत्ता पर प्रकाश डालिए। (14)

5. जायसी की काव्य भाषा पर प्रकाश डालिए।

अथवा

मानसरोदक खंड की अलौकिकता पर प्रकाश डालिए। (14)

6. किसी एक विषय पर टिप्पणी लिखिए। (7)

(क) बानबेघ समय का प्रतिपाद्य
(ख) कबीर की काव्य भाषा
(ग) विद्यापति की प्रेम भावना

munotes.in